E-ISSN: 2706-8927
P-ISSN: 2706-8919
www.allstudyjournal.com
IJAAS 2021; 3(3): 247-250
Received: 05-05-2021
Accepted: 06-06-2021

ममता सिंह
शोध छात्रा शिक्षा, अवधेश प्रताप सिंह वि.वि., रीवा, मध्य प्रदेश, भारत

डॉ0 पतंजलि मिश्र
प्राचार्य, आदर्श शिक्षा महाविद्यालय, पुरैना, जिला रीवा, मध्य प्रदेश, भारत

Corresponding Author:
ममता सिंह
शोध छात्रा शिक्षा, अवधेश प्रताप सिंह वि.वि., रीवा, मध्य प्रदेश, भारत

रीवा जिले के माध्यमिक स्तर पर अध्ययनरत छात्र–छात्राओं के मध्य उपलब्धि अभिप्रेरणा का तुलनात्मक अध्ययन

ममता सिंह एवं डॉ0 पतंजलि मिश्र

सारांश
प्रस्तुत शोध पत्र रीवा जिले के माध्यमिक स्तर पर छात्र–छात्राओं के मध्य उपलब्धि अभिप्रेरणा का तुलनात्मक अध्ययन पर आधारित है। इस अध्ययन के द्वारा माध्यमिक स्तर पर छात्र–छात्राओं व शहरी व ग्रामीण क्षेत्र में उपलब्धि अभिप्रेरणा को ज्ञात किया गया है। 300 छात्र व 300 छात्राओं को प्रतिदर्श लिया गया है। प्रस्तुत अध्ययन में छात्र–छात्राओं की उपलब्धि अभिप्रेरणा को मापने हेतु डॉ. बीना शाह (1986) द्वारा निर्मित उपलब्धि अभिप्रेरणा मापनी का प्रयोग किया गया है। किसी परिस्थिति या विषय विशेष के संदर्भ में अपना कार्य सबसे अच्छा करने तथा जीवन के प्रत्येक क्षेत्र में सामान्य लोगों या छात्र–छात्राओं के द्वारा बनाए गए उत्कृष्ट लक्ष्य या उद्देश्य को पूर्ण करने हेतु उपलब्धि अभिप्रेरणा हमें स्वप्रेरित करती है। समंक विश्लेषण हेतु सांख्यिकीय तकनीक का प्रयोग किया गया है। समंक विश्लेषणोंपरान्त शोध क्षेत्र के माध्यमिक स्तर के छात्र–छात्राओं व शहरी एवं ग्रामीण क्षेत्रों में उपलब्धि अभिप्रेरणा में सार्थक अन्तर पाया गया है।

मुख्यशब्दः रीवा जिला, माध्यमिक स्तर के विद्यालय, शहरी–ग्रामीण, छात्र–छात्राएँ, उपलब्धि अभिप्रेरणा।

1, प्रस्तावना
उपलब्धि अभिप्रेरणा एक प्रमुख सामान्य सामाजिक अभिप्रेरक है। इसका तात्पर्य एक ऐसे अभिप्रेरक से होता है जिससे प्रेरित होकर व्यक्ति अपने कार्य को इस ढंग से करता है कि उसे अधिक से अधिक सफलता प्राप्त हो सके। उपलब्धि अभिप्रेरणा किसी उद्देश्य की प्राप्ति के लिये प्राणी में व्यवहार उत्पन्न करके उसे निश्चित दिशा प्रदान करती है, तथा लक्ष्य प्राप्त होने तक उसे बनाये रखती है। अभिप्रेरणा एक लेटिन शब्द है, जिसका अर्थ है चलाना, गति, आगे बढ़ाना आदि। यह किसी निर्धारित उद्देश्य की ओर गति करती है। इसलिये अभिप्रेरणा को एक शक्ति कहा जा सकता है, जो सीखने वाले के व्यवहार को अर्जित करती है। मनोवैज्ञानिकों ने व्यक्तियों में पाई जाने वाले उपलब्धि अभिप्रेरक सम्बन्धी व्यक्तिगत विभिन्नता के कई कारण बतलाये है। क्योंकि उपलब्धि अभिप्रेरक किसी समाज विशेष के सभी सदस्यों में एक समान नहीं होता है। किसी सदस्य में यह अभिप्रेरक अधिक तो किसी में कम होता है। जिन व्यक्तियों में उपलब्धि अभिप्रेरक अधिक होता है, वे सफलता के उच्चतम् स्तर पर पहुँचने का प्रयास करते हैं। इसी विभिन्नता के लिये मनोवैज्ञानिकों ने कई कारण बतलाये है जिसमें एक प्रमुख कारक माता–पिता द्वारा बचपन में दिया गया स्वतंत्रता प्रशिक्षण है। स्वतंत्रता प्रशिक्षण से तात्पर्य बच्चों को माता–पिता द्वारा स्वतंत्र रूप से भिन्न–भिन्न कार्यों को करने देने से है। कुछ माता–पिता ऐसे होते हैं जो बच्चों को काफी छोटा समझकर उन्हें कई कार्य नहीं करने देते। परन्तु कुछ माता–पिता अपने बच्चों को प्रत्येक कार्य स्वयं ही करने की पूर्ण स्वतंत्रता देते है तथा कार्य पूर्ण करने में भिन्न–भिन्न तरह के प्रोत्साहन भी देते है। इस प्रकार पहले तरह के बच्चों की तुलना में दूसरी तरह के बच्चों को स्वतंत्रता प्रशिक्षण का अनुभव प्राप्त हो पाता है, जिससे कि वयस्क होने पर उनमें उपलब्धि अभिप्रेरणा भी अधिक होना पाया गया है। जीवन में सफलता प्राप्त करने की दृष्टि से उपलब्धि अभिप्रेरणा को महत्वपूर्ण माना गया हे। यह एक अर्जित अभिप्रेरक है, जिसका सम्बन्ध जीवन में आगे बढ़ने की इच्छा के साथ है, जो व्यक्ति को उसे विभिन्न कार्य क्षेत्रों में सफलता प्राप्त करने में सहायता देती है। अभिप्रेरणा एक क्रिया विधि है, जो व्यक्ति को कार्य करने हेतु प्रेरित करता है। इस क्रिया विधि में आवश्यकता, इच्छा या प्रेरक मिलकर अभिप्रेरण चक्र बनाते है, जो उपलब्धि से सीधे सम्बन्धित होते है। इस आवश्यकता या अभिप्रेरणा का प्रतिपादन मुर्रे (1938) ने किया तथा बताया कि यह व्यक्ति को यांत्रिक रूप से संवेगित करके उसे अपने उद्देश्य प्राप्ति की ओर बढ़ाती है। अभिप्रेरणा हमारे संवेगों से सम्बन्धित होती है, परन्तु उपलब्धि हमारे अंतिम लक्ष्य से। इस प्रकार उपलब्धि अभिप्रेरणा सफलता को प्राप्त करने तथा हमारे जीवन की प्रत्येक आकांक्षाओं को पूर्ण करने पर आधारित होती है।

2. अध्ययन की आवश्यकता

मनुष्य एक सामाजिक प्राणी है। वह समाज के विभिन्न लोगों से अपने संबंध स्थापित करता है। हमारे छात्र देश के भावी नागरिक होते हैं। इनमें सामाजिक, सांवेगिक गुणों का विकसित होना स्वस्थ भावी समाज की और इंगित करता है। यह तब संभव हो सकता है, जब उन्हें उचित तथा आवश्यक परिस्थितियाँ प्रदान की जाँय। छात्र–छात्राओं की अभिप्रेरणा उन्हें निरंतर आगे बढ़ने को प्रोत्साहित करती है, यदि उनमें इनका अभाव या कमी है तो वे अपने क्षेत्र में प्रायः पिछड़ जाते हैं, इसलिए इनका अध्ययन प्रासंगिक है। शोधार्थी द्वारा जब इन चरों को लेकर सर्वेक्षण किया गया तो पाया गया कि इन चरों पर आंशिक कार्य हुआ है, लेकिन उपलब्धि अभिप्रेरणा पर अभी तक कोई विस्तृत कार्य संज्ञान में नहीं आया है। माध्यमिक स्तर के छात्र एवं छात्राओं के लिए इन चरों की उपयुक्ता एवं सर्वेक्षणों से प्राप्त निष्कर्षों से विषय में नवीनता इस अध्ययन के औचित्य को दर्शाता है।

3. उद्देश्य :

अतः प्रत्येक क्रिया का कुछ उद्देश्य अवश्य होता है बिना उद्देश्य के विभिन्न प्रकार कठिनाईयों का सामना करना पड़ता है। इन्हीं उद्देश्यों को ध्यान में रखकर शोध कार्य किया जाता है। प्रस्तुत शोध प्रबन्ध में निम्नलिखित उद्देश्य है –

- शोध क्षेत्र के माध्यमिक स्तर पर छात्र–छात्राओं के उपलब्धि अभिप्रेरणा का तुलनात्मक अध्ययन करना।
- शोध क्षेत्र के शहरी तथा ग्रामीण अंचल में माध्यमिक स्तर पर विद्यार्थियों की उपलब्धि अभिप्रेरणा का तुलनात्मक अध्ययन करना।

4. शोध की परिकल्पनाएँ :

1. "रीवा जिले के माध्यमिक स्तर के छात्र एवं छात्राओं की उपलब्धि अभिप्रेरणा के मध्य कोई सार्थक अन्तर नहीं है।"
2. "रीवा जिले के माध्यमिक स्तर के शहरी एवं ग्रामीण क्षेत्र के विद्यार्थियों की उपलब्धि अभिप्रेरणा में सार्थक अन्तर पाया जाता है।"

5. शोध समस्या का सीमांकन :

प्रस्तुत शोध कार्य का क्षेत्र रीवा जिला है। अध्ययन में रीवा जिले के शहरी तथा ग्रामीण दोनों क्षेत्रों से माध्यमिक स्तर के विद्यालयों को लिया गया है। प्रस्तुत शोध में कक्षा–9 व 10 के छात्र–छात्राओं को सम्मिलित किया गया है।

समष्टि व प्रतिदर्श : प्रस्तुत शोध अध्ययन में माध्यमिक स्तर की छात्र–छात्राओं के उपलब्धि अभिप्रेरणा का तुलनात्मक अध्ययन हेतु न्यादर्श के रूप में रीवा जिला के शहरी एवं ग्रामीण परिवेश के कुल 20 शासकीय माध्यमिक विद्यालयों में से न्यादर्श का चयन यादृच्छिक न्यादर्श विधि के आधार पर किया गया है। प्रत्येक चयनित विद्यालयों में से कक्षा 9वीं व कक्षा 10वीं में अध्ययनरत छात्र–छात्राओं को न्यादर्श हेतु चयनित किया गया है। इस प्रकार कुल 600 छात्र–छात्राओं का चयन न्यादर्श हेतु चयन किया गया है।

6. अध्ययन विधि :

- **सर्वेक्षण अध्ययन विधि :** सर्वेक्षण अनुसंधान का एक महत्वपूर्ण अंग है। इसके द्वारा शोध समस्या के विभिन्न पक्षों से सम्बन्धित आंकड़ों का संग्रहण किया जाता है। आंकड़े मुख्य तथा वर्तमान स्तर का निर्धारण, वर्तमान स्तर की मान्य स्तर से तुलना, तथा वर्तमान स्तर को विकसित करने में महत्वपूर्ण उपादान होते हैं। सर्वेक्षण में व्यक्ति की अपेक्षा तथ्यों, परिस्थितियों तथा गणनाओं को प्राथमिकता दी जाती है।
- **साख्यिकीय विधि :** सर्वेक्षण तथा साक्षात्कार विधि से प्राप्त ऑकड़ो का वर्गीकरण एवं सारणीयन किया गया है। जिनकी व्याख्या एवं विष्लेषण हेतु, सांख्यकीय विधियॉ प्रयोग में लाई गयी है। प्रस्तुत शोधकार्य में परिकल्पनाओं का परीक्षण सांख्यकीय विधियों द्वारा करने के लिये– Mean, izfr'kr (%), S.D., 't' Test आदि प्रयोग किये गये है, साथ ही गुणात्मक विश्लेषण पर भी ध्यान रखा गया हैं।

7. शोध उपकरण

प्रस्तुत अध्ययन में छात्र–छात्राओं की उपलब्धि अभिप्रेरणा को मापने हेतु डॉ. बीना शाह (1986) द्वारा निर्मित उपलब्धि अभिप्रेरणा मापनी का प्रयोग किया गया है। उपलब्धि अभिप्रेरणा मापनी में कुल 40 पद है। यह मापनी तीन बिन्दुओं की मापनी है, अर्थात एक ही प्रश्न के तीन उत्तर दिये गये हैं, जिनमें से विद्यार्थियों को अपनी सोच या इच्छा के आधार पर इन तीनों उत्तरों में से किसी एक ही उत्तर का चुनाव करना है। इस मापनी का निर्माण 4 पदों के आधार पर किया गया है। इस प्रकार यह मापनी वस्तुनिष्ठ भी है। उपलब्धि अभिप्रेरणा मापनी को व्यक्तिगत या सामूहिक रूप से दोनों ही प्रकार से प्रशासित किया जा सकता है। शोधार्थी द्वारा इस मापनी को कक्षा में ले जाकर सर्वप्रथम छात्र–छात्राओं को उपलब्धि अभिप्रेरणा मापनी के संबंध में सामान्य निर्देश दिये गये तथा उन्हें मापनी में प्रयुक्त व्यक्तिगत जानकारी को पूर्णरूप से सत्य पूर्ति किये जाने के लिये कहा गया और उन्हें इस बात से अवगत कराया गया कि उनके द्वारा दी गई जानकारी को पूर्णतः गुप्त रखा जायेगा।

8. पूर्व अध्ययन समीक्षा

पूर्ववर्ती अध्ययन से तात्पर्य अनुसंधान की समस्या से सबन्धित उन सभी प्रकार की पुस्तकों, ज्ञान कोशों, पत्र–पत्रिकाओं, शोध पत्रों तथा अभिलेखों आदि से है, जिनके अध्ययन से अनुसंधानकर्ता को अपनी समस्या के चयन, परिकल्पनाओं के निमार्ण, अध्ययन की रूपरेखा तैयार करने तथा कार्य को आगे बढ़ाने में सहायता मिलती है इनमें से मुख्य रूप से दुबे, प्रमिला एवं गर्ग, निकिता (2020)[1], आहलुवालिया, आई (1985)[2], देसवाल, वाई. एवं रानी, आर. (2012)[3], बब्बर, एस. (2014)[4], अंसारी, एम. एम. (1988)[5]. निगम, बी.के. तथा शर्मा, एस.आर. (1993)[6], पाण्डेय, जितेन्द्र कुमार (2007)[7], पाठक, पी.डी. (2007)[8] एवं मिश्रा, ए. (2013)[9] ने शोध विधि एवं छात्र–छात्राओं के उपलब्धि अभिप्रेरणा से सम्बन्धित कार्य किये है।

9. रीवा जिले का सामान्य परिचय :

जिला रीवा मध्य प्रदेश के उत्तरी–पूर्वी कोने में स्थित है। रीवा का नामकरण नर्मदा नदी के दूसरे नाम 'रेवा' पर आधारित है। रीवा नगर का नाम पहले शायद 'रेवा' रखा गया था। उसी का बिगड़ा रूप अब रीवा बन गया है।

इसके उत्तर में उत्तर प्रदेश के बांदा एवं इलाहाबाद जिले, पूर्व तथा पूर्व–उत्तर में उत्तर प्रदेश का ही मिर्जापुर जिला, दक्षिण में अपने राज्य का सीधी जिला और दक्षिण–पश्चिम तथा पश्चिम में सतना जिला है। इसका आकार लगभग त्रिभुज के समान है। इसका विस्तार 24.18^0 उत्तरी अक्षांश से 25^0 उत्तरी अक्षांश तथा 81.2^0 पूर्वी देक्षांश से 82.18^0 पूर्वी देक्षांश के मध्य है। रीवा जिले का क्षेत्रफल 6287 वर्ग किलोमीटर है।

10. परिणामों का विश्लेषण एवं व्याख्याः

शोधार्थी द्वारा किया गया कोई भी शोध कार्य सही अर्थों में तभी प्रतिबिम्बित होता है, जब शोधार्थी द्वारा उस समस्या की वास्तविक स्थिति का मूल्यांकन किया जाय। इसके लिये यह आवश्यक है, कि शोधार्थी द्वारा शोध अध्ययन में उपयोग किये

गये समस्त शोध उपकरणों द्वारा प्राप्त जानकारियों को व्यवस्थित क्रम में सारणीबद्ध किया जाय, निम्नानुसार है–

परिकल्पना क्र. 1: "रीवा जिले के माध्यमिक स्तर के छात्र एवं छात्राओं की उपलब्धि अभिप्रेरणा के मध्य कोई सार्थक अन्तर नहीं है।"

तालिका 1: माध्यमिक स्तर के छात्र एवं छात्राओं की उपलब्धि अभिप्रेरणा का तुलनात्मक अध्ययन

समूह		छात्र	छात्राएँ
समूह की संख्या (N)		300	300
मध्यमान (M)		50.57	43.57
मानक विचलन (SD)		23.11	21.14
क्रान्तिक निष्पत्ति (C.R.)		3.87	
निष्कर्ष	0.05 सार्थकता स्तर पर	सार्थक अन्तर है	
	0.01 सार्थकता स्तर पर	सार्थक अन्तर है	

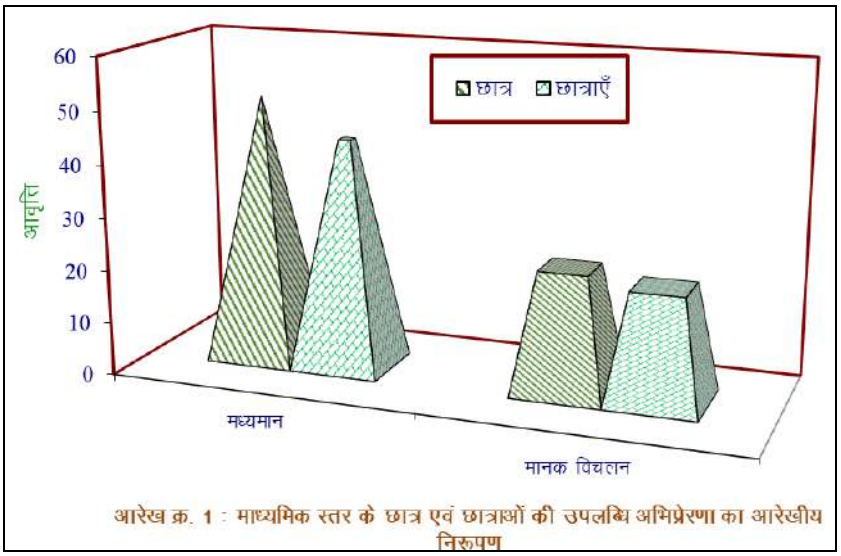

आरेख क्र. 1 : माध्यमिक स्तर के छात्र एवं छात्राओं की उपलब्धि अभिप्रेरणा का आरेखीय निरुपण

विश्लेषण एवं व्याख्या

उपर्युक्त तालिका में माध्यमिक स्तर के छात्र एवं छात्राओं के उपलब्धि अभिप्रेरणा के लिए दोनों समूहों का मध्यमान क्रमशः 50. 57 तथा 43.57 तथा मानक विचलन क्रमशः 23.11 तथा 21.14 प्राप्त हुआ। दोनों समूहों के मध्यमानों में पाये जाने वाले सार्थकता की जाँच के लिए क्रान्तिक अनुपात परीक्षण (ब्त्ए ज्मेज) किया गया, जिसमें ब् का मान 3.87 प्राप्त हुआ जो 0.05 सार्थकता स्तर के मान 1.96 तथा 0.01 सार्थकता स्तर के मान 2.58 से अधिक है। अतः उपलब्धि अभिप्रेरणा के लिए दोनों समूहों में सार्थक अन्तर पाया गया।

अतः उपरोक्त विश्लेषण के आधार पर यह तथ्य सामने आता है कि माध्यमिक स्तर पर छात्र एवं छात्राओं के उपलब्धि अभिप्रेरणा के दोनों मध्यमानों में सार्थक अन्तर देखने को मिलता है। इससे यह निष्कर्ष निकलता है कि माध्यमिक स्तर के छात्र एवं छात्राओं के उपलब्धि अभिप्रेरणा में सार्थक अन्तर पाया जाता है। यह परिकल्पना के असंगत है।

अतः परिकल्पना निरसित होती है।

परिकल्पना क्र. 2 : "रीवा जिले के माध्यमिक स्तर के शहरी एवं ग्रामीण क्षेत्र के विद्यार्थियों की उपलब्धि अभिप्रेरणा में सार्थक अन्तर पाया जाता है।"

तालिका 2: शोध क्षेत्र के शहरी व ग्रामीण क्षेत्र के माध्यमिक स्तर पर विद्यार्थियों के उपलब्धि अभिप्रेरणा का तुलनात्मक अध्ययन

समूह		शहरी अंचल के विद्यार्थी	ग्रामीण अंचल के विद्यार्थी
समूह की संख्या (N)		300	300
मध्यमान (M)		58.33	53.10
मानक विचलन (SD)		20.97	21.12
क्रान्तिक निष्पत्ति (C.R.)		3.05	
निष्कर्ष	0.05 सार्थकता स्तर पर	सार्थक अन्तर है	
	0.01 सार्थकता स्तर पर	सार्थक अन्तर है	

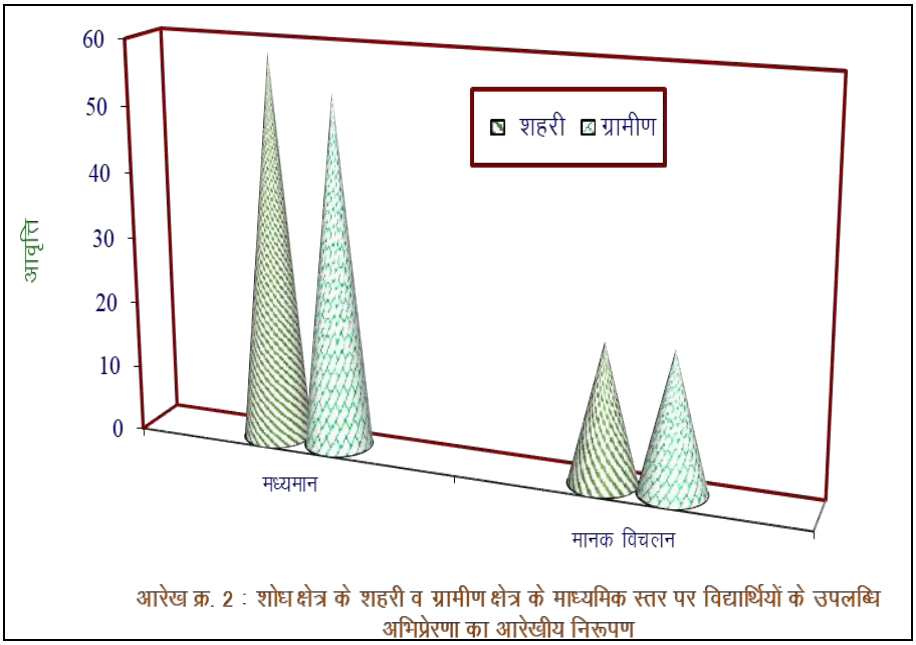

आरेख क्र. 2 : शोध क्षेत्र के शहरी व ग्रामीण क्षेत्र के माध्यमिक स्तर पर विद्यार्थियों के उपलब्धि अभिप्रेरणा का आरेखीय निरूपण

विश्लेषण एवं व्याख्या

उपर्युक्त तालिका में शहरी व ग्रामीण क्षेत्र के माध्यमिक स्तर पर विद्यार्थियों के उपलब्धि अभिप्रेरणा के लिए दोनों समूहों का मध्यमान क्रमशः 58.33 तथा 53.10 तथा मानक विचलन क्रमशः 20.97 तथा 21.12 प्राप्त हुआ। दोनों समूहों के मध्यमानों में पाये जाने वाले सार्थकता की जाँच के लिए क्रान्तिक अनुपात परीक्षण (ब्त्ए ज्मेज) किया गया, जिसमें ब्ट का मान 3.05 प्राप्त हुआ जो 0.05 सार्थकता स्तर के मान 1.96 तथा 0.01 सार्थकता स्तर के मान 2.58 से अधिक है। अतः उपलब्धि अभिप्रेरणा के लिए दोनों समूहों में सार्थक अन्तर पाया गया।

अतः उपरोक्त विश्लेषण के आधार पर यह तथ्य सामने आता है कि शहरी व ग्रामीण क्षेत्र के माध्यमिक स्तर पर विद्यार्थियों के उपलब्धि अभिप्रेरणा के मध्यमान में भी सार्थक अन्तर पाया गया है। इससे यह निष्कर्ष निकलता है कि शहरी व ग्रामीण क्षेत्र के माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों के उपलब्धि अभिप्रेरणा में सार्थक अन्तर पाया जाता है। यह परिकल्पना के संगत है।

अतः परिकल्पना सत्यापित होती है।

निष्कर्ष

अध्ययन के निष्कर्ष केवल उसी जनसंख्या पर लागू होते है। प्रस्तुत अध्ययन रीवा जिले के शहरी एवं ग्रामीण क्षेत्र के छात्र व छात्राओं तक ही सीमित है। अध्ययन के निष्कर्षों की शुद्धता अवधारणाओं की पूर्ति पर आश्रित रहती है। शोध द्वारा प्राप्त परिणाम विभिन्न प्रकार की समस्याओं को हल करने में सहायक होता है। छात्र एवं छात्राएँ विस्तृत चिन्तन वाले कार्य पर अपने प्रदर्शन एवं योग्यता से संबंधित प्रतिपुष्टि प्राप्त करते है, वे कार्य सम्बन्धी टिप्पणी या प्रतिपुष्टि प्राप्त करने वाले छात्रों की तुलना में छात्राएं कम स्वाभाविक अभिप्रेरणा प्रदर्षित करते है। इसी प्रकार शहरी व ग्रामीण क्षेत्र में भी देखने को मिलता है। निष्कर्षतः शोध क्षेत्र के माध्यमिक स्तर पर छात्र व छात्राओं के उपलब्धि अभिप्रेरणा में अन्तर है। इसी प्रकार शहरी व ग्रामीण क्षेत्र के माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों के उपलब्धि अभिप्रेरणा में सार्थक अन्तर पाया गया है।

सन्दर्भ ग्रंथ

1. दुबे, प्रमिला एवं गर्ग, निकिता, अध्यापक के व्यक्तित्व का माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों की उपलब्धि अभिप्रेरणा एवं विषय रुचि पर पड़ने वाले प्रभाव का अध्ययन, Sanskritik aur Samajik Anusandhan, 2020;1(1):14-16.
2. .आहलुवालिया, आई, उपलब्धि अभिप्रेरणा पर लिंग, आयु, जन्म क्रम, आर्थिक स्तर, पालकों की शिक्षा आदि तत्वों के प्रभाव का अध्ययन, फोर्थ सर्वे ऑफ रिसर्च इन एजूकेशन, 1985; 1–48.
3. देसवाल, वाई. एवं रानी, आर., अभिभावक युक्त किशोरों एवं अनाथ किशोरों की उपलब्धि अभिप्रेरणा पर अध्ययन, जर्नल एजुकेशन एण्ड साइकोलॉजीकल रिसर्च, 2012; 2(1), 69–73.
4. बब्बर, एस., उच्चतर माध्यमिक विद्यालयों के विद्यार्थियों के नियंत्रण अवस्थान का उनकी उपलब्धि अभिप्रेरण पर प्रभाव का अध्ययन, शोध संप्रेषण, जुलाई–सितम्बर 2014, अंक 9, 133–139.
5. अंसारी, एम.एम., डिटरमाइनेट्स ऑफ कोस्ट्स इन डिस्टेंस एजुकेशन, इन कौल, बी.एन. सिंह, बी. एवं अंसारी एम.एम. स्टडीज इन डिस्टेंस एजुकेशन, नई दिल्ली, ए.आई.यू. एवं इग्नू, 1988.
6. निगम, बी.के. तथा शर्मा, एस.आर. –''भारतीय शिक्षा का इतिहास एवं समस्यायें'' (प्रथम संस्करण) कनिष्ठ प्रकाशन, नई दिल्ली, 1993.
7. पाण्डेय, जितेन्द्र कुमार – भारत में आधुनिक शिक्षा का प्रसारः दशा और दिशा, कुरुक्षेत्र मासिक पत्रिका, ग्रामीण विकास मंत्रालय, भारत सरकार, नई दिल्ली, 2007, वर्ष 53, अंक 11, पृ. 7–9.
8. पाठक, पी.डी – भारतीय शिक्षा और उसकी समस्यायें इक्कीसवाँ संस्करण, विनोद पुस्तक मन्दिर, आगरा 2007.
9. मिश्रा, ए., उच्चतर माध्यमिक विद्यालय के विद्यार्थियों की उपलब्धि अभिप्रेरणा पर शालेय वातावरण का प्रभाव, शोध संप्रेषण, 2013; अंक 7, पृष्ठ 57–59.